बिहार का सबसे बड़ा शहर—पटना (जनसंख्या में)।

बिहार का सबसे बड़ा तीर्थस्थल—गया।

क्षेत्रफल की दृष्टि से बिहार का सबसे बड़ा जिला—पश्चिमी चंपारण।

बिहार का सबसे बड़ा रेलवे पुल—अब्दुल बारी पुल कोईलवर।

बिहार की सबसे लंबी नदी—गंगा नदी।

बिहार का सबसे बड़ा हवाई अड्डा—जयप्रकाश नारायण हवाई अड्डा, पटना।

बिहार का सबसे बड़ा तारामंडल—इंदिरा गांधी तारामंडल, पटना।

बिहार में गंगा की सबसे बड़ी सहायक नदी—कोसी।

बिहार की सबसे बड़ी नदी घाटी परियोजना—गंडक परियोजना।

बिहार का सबसे बड़ा राष्ट्रीयकृत बैंक—भारतीय स्टेट बैंक।

□□□

हमारा राज्य बिहार

क्षेत्रफल	:	94,163 वर्ग किलोमीटर
जनसंख्या	:	10,38,04,637
राजधानी	:	पटना
मुख्य भाषा	:	हिंदी

इतिहास

बिहार का ऐतिहासिक नाम मगध है। बिहार की राजधानी पटना का ऐतिहासिक नाम पाटलिपुत्र है। बिहार का उल्लेख वेदों, पुराणों एवं प्राचीन महाकाव्यों आदि में मिलता है। यह राज्य महात्मा बुद्ध तथा 24 जैन तीर्थंकरों की कर्मभूमि रहा है। ईसापूर्व काल में इस क्षेत्र पर बिंबसार, पाटलिपुत्र शहर की स्थापना करनेवाले उदयन, चंद्रगुप्त मौर्य और सम्राट् अशोक सहित मौर्य, शुंग तथा कण्व राजवंश के नरेशों ने राज किया। इसके पश्चात् कुषाण शासकों का समय आया और बाद में गुप्त वंश के चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने बिहार पर राज किया। मध्यकाल में मुसलिम शासकों का इस क्षेत्र पर अधिकार रहा।

बिहार पर सबसे पहले विजय पानेवाला मुसलिम शासक मोहम्मद बिन बख्तियार खिलजी था। खिलजी वंश के बाद तुगलक वंश तथा मुगल वंश का आधिपत्य रहा।

बिहार भारत के प्रमुख राज्यों में से एक है। इसके उत्तर में नेपाल, पूर्व में पश्चिम बंगाल, पश्चिम में उत्तर प्रदेश तथा दक्षिण में झारखंड राज्य हैं। बिहार के प्रमुख जिले हैं—औरंगाबाद, कटिहार, किशनगंज, कैमूर, खगड़िया, गया, गोपालगंज, चंपारण, जमुई, जहानाबाद, दरभंगा, नालंदा, पटना, पश्चिमी चंपारण, पूर्णिया, बाढ़, बेगूसराय, भागलपुर, भोजपुर, मधेपुरा, मुंगेर, रोहतास, लखीसराय, वैशाली, शिवहर। यहाँ

अनेक नदियाँ बहती हैं, जिनमें प्रमुख हैं—गंगा, सोन, पुनपुन, फल्गु, कर्मनाशा, दुर्गावती, कोसी, गंडक, घाघरा आदि।

कृषि

बिहार का कुल भौगोलिक क्षेत्र लगभग 93.60 लाख हेक्टेयर है, जिसमें से केवल 55.65 लाख हेक्टेयर पर ही वास्तव में खेती होती है। वैसे राज्य में लगभग 77.19 लाख हेक्टेयर भूमि कृषि योग्य है। विभिन्न साधनों से कुल 46 लाख हेक्टेयर भूमि पर सिंचाई सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जबकि करीब 34.62 लाख हेक्टेयर भूमि की सिंचाई होती है।

यहाँ की प्रमुख खाद्य फसलें हैं—धान, गेहूँ, मक्का और दालें। मुख्य नकदी फसलें हैं—गन्ना, आलू, तंबाकू, तिलहन, प्याज, मिर्च, पटसन और मेस्ताप। लगभग 6.22 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में वन फैले हैं, जो राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र के करीब 6.65 प्रतिशत हैं।

उद्योग

राज्य के मुख्य उद्योग हैं—मुजफ्फरपुर और मोकामा में भारत वैगन लिमिटेड का रेलवे वैगन प्लांट। बरौनी में भारतीय तेल निगम का तेलशोधक कारखाना। बरौनी का एच.पी.सी.एल. और अमझोर का पाइराइट्स फास्फेट एंड केमिकल्स लिमिटेड (पी.पी.सी.एल.) राज्य के उर्वरक संयंत्र हैं। सीवान, भागलपुर, पंडौल, मोकामा और गया में 5 बड़ी सूत कताई मिलें हैं। उत्तर व दक्षिण बिहार में 13 चीनी मिलें निजी क्षेत्र की तथा 15 चीनी मिलें सार्वजनिक क्षेत्र की हैं, जिनकी कुल पेराई क्षमता 45,000 टन है। इसके अलावा गोपालगंज, पश्चिमी चंपारण, भागलपुर और रीगा (सीतामढ़ी जिला) में शराब बनाने के कारखाने हैं। पश्चिमी चंपारण, मुजफ्फरपुर और बरौनी में चमड़ा प्रसंस्करण उद्योग हैं। कटिहार और समस्तीपुर में तीन बड़े पटसन कारखाने हैं। हाजीपुर में दवाएँ बनाने का कारखाना, औरंगाबाद व पटना में खाद्य प्रसंस्करण और वनस्पति घी बनाने के कारखाने हैं। इसके अलावा बंजारी में कल्याणपुर सीमेंट लिमिटेड नामक सीमेंट कारखाने का बिहार के औद्योगिक नक्शे में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

सिंचाई

बिहार में कुल सिंचाई क्षमता 28.73 लाख हेक्टेयर है। यह क्षमता बड़ी, मँझोली तथा 49.35 लघु सिंचाई परियोजनाओं से जुटाई जाती है।

मंडन मिश्र – भाव विवेक, विधि सेवक।

रामवृक्ष बेनीपुरी – अंबपाली, माटी की मूरतें, चिता के फूल, संघमित्रा।

रामधारी सिंह 'दिनकर' – उर्वशी, रेणुका, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतिज्ञा।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' – मैला आँचल, जुलूस, पलटू बाबू रोड, दीर्घतया।

देवकीनंदन खत्री – चंद्रकांता संतति, काजर की कोठरी, भूतनाथ, नौलखा हार।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद – इंडिया डिवाइडेड, चंपारण में सत्याग्रह, बापू के कदमों पे।

केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' – ज्वाला, कैकेयी, गतुवंश, प्रक्रिया।

जानकी वल्लभ शास्त्री – काकली, गाया मेघगीत, अवंतिका, चिंताहास, अमीप्रस्थ, हंस बुलावा, मन की बात, एक किरण, सौ भाइयों, दो तिनकों का घोंसला, अश्वबुद्ध, नील झील, तमसा आदि।

वाचस्पति मिश्र – भाष्य भारती, ब्रह्म-सिद्धि का टीकाकार।

शाह अजीमाबादी – नक्शे-पायदार।

राजा राधिकारमण प्र. सिंह – पुरुष और नारी।

डॉ. कुमार विमल – मूल्य और मीमांसा, सर्जना के स्वर, अंगार, ये संपुट सीपी, युग मानव बापू, ये अभंग, अनुभव अमृत, सौंदर्यशास्त्र के तत्त्व आदि।

नलिन विलोचन शर्मा – दृष्टिकोण और मापदंड, विष के दाँत, साहित्य का इतिहास एवं दर्शन।

बिहार में सबसे बड़ा व सबसे छोटा

जनसंख्या की दृष्टि से बिहार का सबसे बड़ा जिला—पटना।

बिहार का सबसे लंबा प्लेटफॉर्म—सोनपुर।

बिहार का सबसे बड़ा सड़क-सेतु—महात्मा गांधी सेतु (पटना)।

बिहार का सबसे छोटा जिला (क्षेत्रफल)—शेखपुरा।

बिहार का सबसे छोटा जिला (जनसंख्या)—शिवहर।

उनकी ख्याति-प्राप्त रचना है। उनकी अन्य कृतियाँ हैं—ठुमरी, दीर्घतपा जुलूस, पलटू बाबू रोड, नेपाली क्रांति कथा, बन तुलसी की गंध, श्रुत-अश्रुत पूर्व, अच्छे आदमी आदि। रेणु को पद्मश्री की उपाधि और साहित्यकार सम्मान पेंशन भी मिला, जो बाद में जयप्रकाश आंदोलन में रेणु ने सरकार को वापस कर दिया। 11 अप्रैल, 1977 को उनका निधन हो गया।

कुछ अन्य नाम हैं—

भगवान् महावीर, महर्षि याज्ञवल्क्य, विद्यापति, भिखारी ठाकुर, उदयनाचार्य, मंडन-भारती, वीर कुँवर सिंह, कुमारिल भट्ट, आदि।

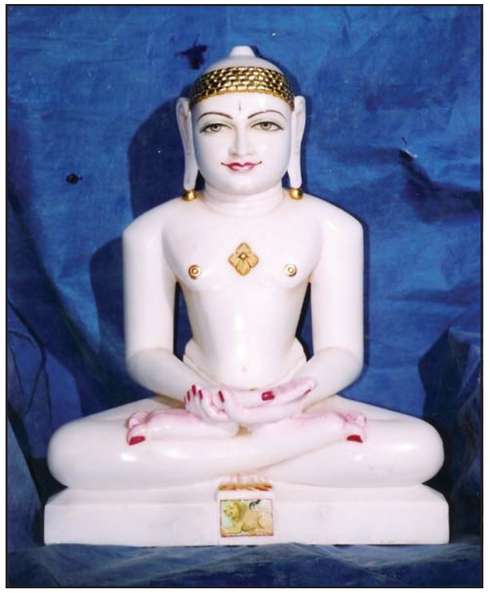

बिहार के प्रमुख साहित्यकार एवं उनकी कृतियाँ

चाणक्य	–	अर्थशास्त्र।
बाणभट्ट	–	कादंबरी, हर्षचरित, चंडीशतक।
आर्यभट	–	आर्यभटीयम् (संस्कृत)।
ज्योतिरीश्वर ठाकुर	–	दर्शन रत्नाकर, वर्ण रत्नाकर।
दाउद	–	चंद्रायन।
विष्णु शर्मा	–	पंचतंत्र, हितोपदेश।
बाबा नागार्जुन	–	बटेसरनाथ, पारो, बलचनमा, रतिनाथ की चाची।
शिव सागर मिश्र	–	दूब जनम छाई।
राहुल सांकृत्यायन	–	दर्शन दिग्दर्शन, बुद्धचर्या, विनय पिटक, धम्मपद।
विद्यापति	–	पदावली, कीर्तिलता, कीर्ति पताका।
अश्वघोष	–	बुद्धचरित, ब्रज सूची, महायान श्रद्योत्पाद संग्रह।
वात्स्यायन	–	कामसूत्रम्।

परिवहन

सड़कें : मार्च 2009 तक बिहार में 46,107.00 किलोमीटर पक्की सड़कें थीं। इनमें 3,734 किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्ग, 3,989 किलोमीटर प्रांतीय राजमार्ग, 8,156 प्रमुख जिला सड़कें, 3,818 किलोमीटर अन्य जिला सड़कें तथा 27,400 किलोमीटर ग्रामीण सड़कें शामिल थीं।

रेलवे : बिहार में रेल लाइनों का अच्छा जाल बिछा हुआ है। मोकामा में एकमात्र रेलवे पुल होने के कारण उत्तरी बिहार के लिए परिवहन व्यवस्था में थोड़ी परेशानी है। कुछ महत्त्वपूर्ण स्थानों को जोड़नेवाले रेल मार्गों, जैसे—मुजफ्फरपुर-समस्तीपुर-बरौनी-कटिहार और मुजफ्फरपुर-छपरा-सीवान को बड़ी लाइन में बदला गया है। पटना, गया, मुजफ्फरपुर, कटिहार और समस्तीपुर राज्य के मुख्य रेलवे जंक्शन हैं।

उड्डयन : राज्य में सभी बड़े जिलों में हवाई पट्टियों के अलावा पटना में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है।

शिक्षा

प्राचीन समय में बिहार शिक्षा के प्रमुख केंद्रों में गिना जाता था। नालंदा, विक्रमशिला तथा ओदंतपुरी विश्वविद्यालय प्राचीन बिहार के गौरवशाली अध्ययन केंद्र थे। सन् 1917 में खुलनेवाला पटना विश्वविद्यालय काफी हद तक अपनी प्रतिष्ठा कायम रखने में सफल रहा, किंतु स्वतंत्रता के पश्चात् शैक्षणिक संस्थानों में राजनीति तथा अकर्मण्यता से शिक्षा के स्तर में गिरावट आई। हाल के दिनों में उच्च शिक्षा की स्थिति सुधरने लगी है, किंतु प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा का व्यवसायीकरण हो गया है।

पर्यटन स्थल

राज्य के प्रमुख पर्यटन केंद्र हैं—राजगीर, नालंदा, वैशाली, पावापुरी (जहाँ भगवान् महावीर ने अंतिम साँस ली और निर्वाण प्राप्त किया), बोधगया, विक्रमशिला (उच्च शिक्षा के बौद्ध विश्वविद्यालय के अवशेष), पटना (पाटलिपुत्र का प्राचीन नगर) और सासाराम (शेरशाह सूरी का मकबरा) तथा मधुबनी (प्रसिद्ध मधुबनी चित्रकला का केंद्र)। अन्य महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल हैं—मुंडेश्वरी मंदिर (कैमूर), रोहतासगढ़ किला (रोहतास), जैन तीर्थस्थल, कुंडलपुर (नालंदा), बिहार योग केंद्र (मुंगेर), मनेर शरीफ पटना, ग्रामीण पर्यटन स्थल नेपुरा (नालंदा), केसरिया स्तूप (पश्चिमी चंपारण), बाड़ाबार पहाड़ियाँ (जहानाबाद), लौरिया नंदनगढ़।

भाषाएँ एवं बोलियाँ

बिहार में बोली जानेवाली भाषाओं और बोलियों में मैथिली, अंगिका, वज्जिका, मगही और भोजपुरी प्रमुख हैं। यहाँ की राजभाषा हिंदी तथा द्वितीय राजभाषा उर्दू है। लोग प्राय: हिंदी-उर्दू मिश्रित भाषा बोलते हैं, जिसे 'बिहारी भाषा' कहा जाता है। पहाड़ी भाषाओं में संथाली, मुंडारी, उराँव, हो और खगड़िया प्रमुख हैं।

बिहार की लोक-चित्रकलाएँ

बिहार की लोक-चित्रकलाओं में मिथिला चित्रकला, जादोपटिया, झँप मंजूषा चित्र शैली, शंका चित्रकला, पटना कलम शैली आदि उल्लेखनीय हैं।

मिथिला चित्रकला—बिहार की कला संस्कृति की परंपरा में मिथिला चित्रकला का स्थान सर्वोपरि है। यह कला मिथिला के मधुबनी, दरभंगा, सहरसा और पूर्णिया जिले के समस्त लोक-जीवन की कला है। मिथिला की चित्रकला तालिका लकड़ी, बाँस की कमची या दियासलाई की तीलियों से बनाई जाती है। रंग भरने की तालिका के सिरे पर रुई अथवा सूत लपेटा जाता है।

जादोपटिया चित्रकला—यह चित्रकला संथाल जनजाति की एक उपजाति जादो लोगों के द्वारा कई पीढ़ियों से बनाई जाती रही है। जादोपटिया शैली के चित्र कपड़े या कागज के टुकड़ों को जोड़कर बनाए गए

उसके बाद समाजवादी आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सन् 1952 से लेकर 17 फरवरी, 1988 तक विधायक, सांसद, नेता प्रतिपक्ष, उपमुख्यमंत्री और मुख्यमंत्री (बिहार) के पद को सुशोभित करते रहे। सन् 1967 में वे बिहार सरकार के उपमुख्यमंत्री हुए। सन् 1969 से 1970 तक संयुक्त समाजवादी पार्टी के अखिल भारतीय अध्यक्ष रहे। आपातकाल के बाद वर्ष 1977 में केंद्र में जनता पार्टी की सरकार बनी और बिहार में भी कई राज्यों की तरह जनता पार्टी की सरकार बनी। बिहार में जनता पार्टी सरकार का नेतृत्व कर्पूरीजी ने किया। कर्पूरीजी 1980 से लेकर महाप्रयाण की तिथि 17 फरवरी, 1988 तक प्रतिपक्षी दल के नेता रहे।

रामधारी सिंह 'दिनकर'—रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितंबर, 1908 को बिहार प्रांत के मुंगेर जिला के सिमरिया गाँव, जो वर्तमान में बेगूसराय जिला अंतर्गत है, में हुआ था। दिनकर का पहला कविता संकलन 'रेणुका' वर्ष 1935 में, 1946 में 'कुरुक्षेत्र' 1961 में 'उर्वशी' का प्रकाशन हुआ। साहित्य जगत् में इस काव्य रचना का अभूतपूर्व स्वागत हुआ। 'कामायनी' और 'अंधा युग' के बाद 'उर्वशी' ने एक बड़े सहृदय समुदाय को अपनी ओर आकृष्ट करने में सफलता हासिल की। सन् 1959 में उन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया गया। 24 अप्रैल, 1974 की रात को साढ़े ग्यारह बजे उन्हें दिल का दौरा पड़ा और उनका निधन हो गया।

फणीश्वरनाथ 'रेणु'—फणीश्वरनाथ 'रेणु' बहुमुखी प्रतिभा के धनी और कलम के जादूगर थे। उनका जन्म 4 मार्च, 1921 को पूर्णिया जिले के गाँव औराही हिंगना में हुआ था। 'मैला आँचल'

हो गया, जिसके कारण उन्हें अपने ननिहाल में मामा अलीबख्श के पास बनारस जाना पड़ा। मामा के संरक्षण में बिस्मिल्लाह की संगीत शिक्षा तथा संगीत के अभ्यास का क्रम प्रारंभ हो गया। बिस्मिल्लाह की भक्ति और साधना का ही प्रतिफल था कि मात्र चौदह वर्ष की अवस्था में सन् 1930 में अखिल भारतीय संगीत परिषद् में अपनी पहली महफिल पेश करने का अवसर प्राप्त हुआ। सन् 1960 में फिल्म 'गूँज उठी शहनाई' में दी गई संगीत की धुन उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ की थी, जिसमें शहनाई के स्वरों का मर्मभेदी प्रयोग कर उन्होंने स्वयं को अमर कर लिया। सन् 1961 में उन्हें 'पद्मश्री' तथा 1980 में 'पद्म-विभूषण' से सम्मानित किया गया। वर्ष 2001 में उन्हें भारत सरकार का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत-रत्न' प्रदान किया गया। 21 अगस्त, 2006 को उनका देहांत हो गया।

नागार्जुन—नागार्जुन का जन्म वर्ष 1911 की ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन अपने ननिहाल में हुआ, जो बिहार प्रांत के मधुबनी जिला के अंतर्गत सतलखा गाँव है। नागार्जुन की प्रारंभिक शिक्षा तरौनी गाँव की संस्कृत पाठशाला से शुरू हुई। बाद में संस्कृत की विधिवत् पढ़ाई बनारस जाकर शुरू की। नागार्जुन ने हर विधा में लेखन कार्य किया, जैसे कहानी, कविता, निबंध, उपन्यास, खंडकाव्य, बाल-साहित्य, कॉलम आदि। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—रतिनाथ की चाची, बाबा बटेसरनाथ, दु:खमोचन, वरुण के बेटे, नई पौध, जमनिया का बाबा (उपन्यास), युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, प्यारी पथराई आँखें, तालाब की मछलियाँ, चंदना, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, तूने कहा था, पुरानी जूतियों का कोरस, हजार-हजार बाँहों वाली, पका है यह कटहल, अपने खेत में, मिलिट्री का बूढ़ा घोड़ा (कविता-संग्रह), भस्मांकुर, भूमिजा (खंडकाव्य), चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ (हिंदी में अनूदित), पारो (मैथिली उपन्यास), धर्मलोकशतकम् (संस्कृत काव्य) आदि। साहित्य के क्षेत्र में नागार्जुन के अवदानों को भुलाया नहीं जा सकता है। बाबा नागार्जुन का निधन 5 नवंबर, 1998 को हुआ।

कर्पूरी ठाकुर—कर्पूरी ठाकुर अत्यंत ही गरीब परिवार में पैदा हुए थे। निरक्षर और भूमिहीन परिवार में 24 जनवरी, 1924 को जन्म लेकर कर्पूरीजी ने सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन और

पट वितान पर चित्रित किए जाते हैं। इन पटों पर चार से सोलह चित्र बने रहते हैं। चित्रों के बनाने में मुख्य रूप से भूरा, हरा, पीला और काला रंग प्रयुक्त होता है।

थंका चित्रकला—थंका चित्र शैली मूलत: तिब्बती चित्र शैली से उत्पन्न बिहारी चित्रशैली है। इस चित्रकला में जातक कथाओं, बुद्ध के धर्मोपदेशों, भारतीय व तिब्बती बौद्ध संतों की जीवनियों से संबंधित चित्र अंकित हैं।

झँप-मंजूषा चित्रकला—यह चित्रकला बिहार के अंग और कोशी अंचलों में प्रचलित है।

पटना कलम या पटना शैली—पटना शैली के चित्र मुख्यत: लघु चित्रों के रूप में हैं, जिन्हें अधिकतर कागज और कहीं-कहीं हाथी-दाँत पर बनाया गया है।

बिहार के लोक नृत्य

बिहार में भाँति-भाँति के लोक-नृत्य हैं। प्रमुख नृत्य निम्नलिखित हैं—

बिदापत—बिदापत का प्रदर्शन मुख्यतया उत्तरी बिहार के पूर्णिया व अररिया जिले तथा नेपाल के मधेस अंचलों में खास होता है। बिदापत के प्रदर्शन में शृंगार रस के साथ हास्य रस का समावेश रहता है। बिदापत नृत्य का प्रदर्शन गाँवों में मांगलिक व सामाजिक उत्सवों पर किया जाता है। शादी-विवाह, मुंडन के अवसर पर बिदापत नृत्य की मंडली विशेष रूप से बुलाई जाती है।

किरतनिया—किरतनिया मिथिला का लुप्तप्राय पारंपरिक लोकनृत्य है। किरतनिया मूलत: नाटकों के अंतर्गत

अभिनय गीत-संगीत के मध्य किया जाने वाला विशिष्ट नृत्य है। इसके कथानक नाटक होते हैं, जिसके संवाद संस्कृत और प्राकृत में लिखे गए हैं।

नटुवा नाच—नटुवा नाच बिहार और नेपाल के मैथिली-भाषी अंचल का जनप्रिय लोक-नृत्य है। इन क्षेत्रों में दशहरा, दीवाली तथा छठ जैसे त्योहारों के अवसर पर लगनेवाले मेले का मुख्य आकर्षण नटुवा नाच ही होता है।

सलहेस नाच—सलहेस नाच बिहार के मिथिलांचल के अलावा नेपाल के मघेस अंचल का लोकप्रिय लोक-नृत्य है। सलहेस लोक देवता के रूप में पूजित पात्र है। सलहेस नाच में सलहेस के भक्त उनके जीवन के पराक्रम तथा चामत्कारिक घटनाओं का गुणगान अंग-संचालन के साथ भाव-भंगिमा-युक्त गायन द्वारा करते हैं।

हुडुक नाच—हुडुक नाच बिहार, उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश के गोंड बाहुल्य अंचल का जनप्रिय लोकनृत्य है। हुडुक नाच में हुडुक वाद्य के वादन के साथ गायन तथा संवाद-युक्त नाटकीय भाव व्यक्त किए जाते हैं।

झिझिया नृत्य—यह दुर्गा-पूजा के अवसर पर आयोजित होनेवाला नृत्य है। यह लोकनृत्य गाँव की महिलाओं तथा उनकी सहेलियों द्वारा एक घेरा बनाकर किया जाता है।

कठघोड़वा नृत्य—बिहार में यह नृत्य विशेष लोकप्रिय है। इस नृत्य में लकड़ी तथा बाँस की खपच्चियों द्वारा निर्मित तथा रंग-बिरंगे वस्त्रों द्वारा सुसज्जित घोड़े के पीठ के ऊपरी भाग को नर्तक अपनी पीठ से बाँधकर विभिन्न वाद्य यंत्रों के साथ नृत्य करता है।

लौंडा नृत्य—बिहार के भोजपुरी भाषा में लड़के को लौंडा कहा जाता है। चूँकि यह नृत्य लड़कों के द्वारा किया जाता है, अत: इसे लौंडा नृत्य कहा जाता है।

पँवड़िया नृत्य—पँवड़िया नृत्य विशेषकर नवजात शिशु के जन्म होने के उपलक्ष्य में होता है। इसे सामान्यत: पुरुष ही करते हैं, जो घाघरा-चोली पहनकर हाथों में ढोल-झाँझ, मजीरा लेकर जन्म-संस्कार के विशेष गीत सोहर, खेलौना आदि गाते हुए नृत्य करते हैं।

धोबिया नृत्य—बिहार के भोजपुर जिले में धोबिया नृत्य विवाह तथा अन्य मांगलिक अवसरों पर धोबी समाज में सामूहिक रूप से किया जानेवाला नृत्य है।

जोगीड़ा नृत्य—यह होली के अवसर पर ग्रामीण क्षेत्रों में पुरुष वर्ग द्वारा गाकर किया जानेवाला नृत्य है।

बिहार के महापुरुष

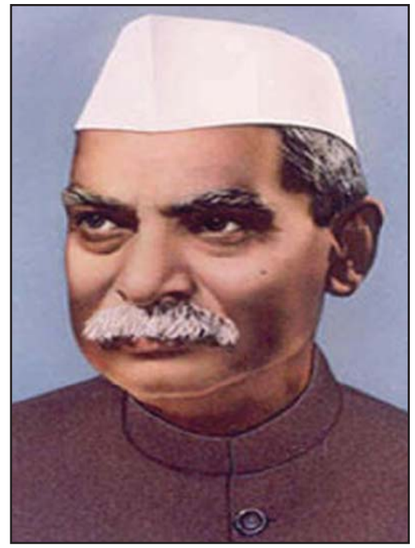

डॉ. राजेंद्र प्रसाद—डॉ. राजेंद्र प्रसाद का जन्म बिहार के तत्कालीन सारण और आज के सिवान जिले के जीरादेई गाँव में 3 दिसंबर, 1884 को हुआ। भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने की वजह से वे अगस्त 1942 से जून 1945 तक जेल में रहे। डॉ. प्रसाद दो बार भारत के राष्ट्रपति रहे। 28 फरवरी, 1963 को यह महान् विभूति सदा के लिए दुनिया से चली गई।

जयप्रकाश नारायण—जयप्रकाश नारायण का जन्म बिहार के छपरा जिले के सिताबदियारा गाँव में 11 अक्तूबर, 1902 को हुआ था। पटना में अपने विद्यार्थी जीवन में जयप्रकाश नारायण ने स्वतंत्रता संग्राम में भी भाग लिया और जेल भी गए। वे उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका गए। वर्ष 1975 में इंदिरा गांधी ने आपातकाल की घोषणा की, जिसके अंतर्गत जे.पी. सहित 600 से भी अधिक विरोधी नेताओं को बंदी बनाया गया। 1977 में जे.पी. के प्रयासों से एकजुट विरोधी पक्ष ने इंदिरा गांधी को चुनाव में हरा दिया। 8 अक्तूबर, 1979 को हृदय की बीमारी और मधुमेह के कारण इनका निधन हो गया।

रामबृक्ष बेनीपुरी—बेनीपुरी का जन्म 23 दिसंबर, 1899 को बिहार में मुजफ्फरपुर जिले के कटरा थाना अंतर्गत बेनीपुर गाँव में हुआ था। रामबृक्ष बेनीपुरी एक कर्मठ स्वाधीनता सेनानी थे। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में उनकी सक्रिय भूमिका रही। उन्होंने अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। उनके दो प्रमुख उपन्यास 'पतितों के देश में' और 'कैदी की पत्नी' को काफी प्रसिद्धि मिली। बेनीपुरीजी के जीवन का अंतिम काल काफी कष्टपूर्ण रहा। निश्चेतन अवस्था में ही 7 सितंबर, 1968 को उनकी जीवन-लीला समाप्त हो गई।

बिस्मिल्लाह खाँ—उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ का जन्म 16 मार्च, 1916 को बिहार के डुमराँव (बक्सर) में हुआ। जब वे छह साल के थे, तो उनकी माँ का देहांत

बिहार की प्रमुख नदियाँ

नदियाँ किसी भी क्षेत्र की सांस्कृतिक संपदा हैं। इस मामले में बिहार गौरवशाली रहा है, जहाँ छोटी-बड़ी अनेक नदियाँ मिलकर बिहार को वैभव प्रदान करती हैं। इनमें प्रमुख हैं—सोन, उत्तरी

कोयल, पंचाने, संकरी, चानन, अजय, कर्मनाशा, गंगा, सरयू या घाघरा, गंडक, बूढ़ी गंडक, बागमती, कमला बलान, कोसी, महानदी, पुनपुन, फल्गु और किऊल नदी।

खेलकूद

भारत के अन्य कई जगहों की तरह क्रिकेट यहाँ भी सर्वाधिक लोकप्रिय है। इसके अलावा फुटबॉल, हॉकी, टेनिस और गोल्फ भी पसंद किया जाता है। बिहार का अधिकांश हिस्सा ग्रामीण होने के कारण पारंपरिक भारतीय खेल जैसे कबड्डी, गिल्ली-डंडा, कंचे लोकप्रिय खेल हैं।

बिहार के हस्तशिल्प

बिहार में प्रचलित हस्तशिल्प कलाएँ निम्नांकित हैं—

मृण्मूर्ति—विवाह तथा अन्य समारोहों के अवसर पर मृण्मूर्ति तथा खिलौने आदि का निर्माण किया जाता है।

सिक्की—विशेष समारोह के अवसर पर जो उपयोगी वस्तुएँ निर्मित की जाती हैं, वे अत्यंत अलंकृत होती हैं तथा उन में रंग-बिरंगे बरतन, पात्र (पौती), सौंदर्य प्रसाधन, पनबट्टी आदि अधिक प्रसिद्ध व लोकप्रिय हैं।

बुनाई-कढ़ाई—बिहार के हस्तशिल्प में गृहकला के रूप में अन्य पक्ष भी है। सूई-शिल्प, जिसे कसीदा अथवा कढ़ाई भी कहा जाता है, महिलाओं के बीच हस्तशिल्प के रूप में अति प्राचीन काल से लोकप्रिय रहा है। इस कला की लोकप्रियता बिहार के मुसलमान संप्रदाय में भी है। इस कला को सूई चित्रकला की संज्ञा भी दी जा सकती है, जिसमें सूई और धागा के माध्यम से एक-से-एक विलक्षण चित्र व आकारों का निर्माण किया जाता है।

सुजनी-खेंदड़ा—हस्तशिल्प में सुजनी या खेंदड़ा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मिथिला में अति प्राचीन काल से सुजनी बनाने का प्रचलन है।

लक्ष या लाह शिल्प—मिथिला क्षेत्र लाह की वस्तुओं के निर्माण का प्रख्यात केंद्र रहा है। लाह की सामग्री का संबंध सामाजिक रीति-रिवाज एवं लोक-व्यवहार से रहा है।

गुड़िया शिल्प—गुड़िया के अनेक प्रकार, आकार एवं शैली समस्त विश्व में लोकप्रिय हैं;

किंतु बिहार के मिथिलांचल के सामाजिक जीवन में इसका अपना विशेष महत्त्व है।

अन्यान्य हस्तकला—सूत कातना बिहार की एक प्राचीन हस्तकला है। तकली तथा चरखा के माध्यम से सूत कातने की यहाँ दीर्घ परंपरा रही है।

बिहार के लोक-नाट्य

बिहार में विभिन्न प्रकार के लोक-नाट्य प्रचलित हैं। उन्हें मुख्यत: तीन कोटियों के अंतर्गत विभाजित किया जा सकता है—सामाजिक लोक-नाट्य, धार्मिक लोक-नाट्य और अन्यान्य लोक-नाट्य।

सामाजिक लोक-नाट्य—वे हैं, जिनकी कथावस्तु सामान्यत: पारिवारिक व सामाजिक जीवन से संबंधित होती है। इस प्रकार के लोक-नाट्यों में मुख्यत: जट-जटिन, सामा-चकेवा, जालिम सिंह का नाच, बिरहा, बिदेसिया आदि प्रमुख हैं।

धार्मिक लोक-नाट्य—वे हैं, जिनका संबंध प्रधानत: कीर्तन, ईश्वर गुण चर्चा तथा आध्यात्मिक जीवन से रहता है। इस प्रकार नाट्यों के दर्शन से समाज के दर्शकों में सात्त्विक भावों का उदय होता है। इस प्रकार मनोरंजन के अतिरिक्त भगवद्-भजन इन नाट्यों के प्रधान उद्देश्य होते हैं। ऐसे नाटकों में रामलीला, रास, यात्रा, पार्टी इत्यादि महत्त्वपूर्ण हैं। बिहार के प्रमुख लोक-नाट्य हैं—

बिदेसिया, जट-जटिन, सामा-चकेवा, नारदी, डोमकछ, बगुली, बिरहा, जालिम सिंह, हिरनी-बिरनी, रामलीला।

सौराठ मेला—सौराठ बिहार के मधुबनी में प्रतिवर्ष मैथिलों का विश्वव्यापी सम्मिलन होता है, जो मेले के स्वरूप में परिणत हो जाता है। यहाँ मैथिलों का वैवाहिक मेला लगता है, जिसे 'सभाशाछी' कहते हैं। यह मेला मूलत: विवाह में आर्थिक परेशानियों से मुक्ति तथा मितव्ययता लाने के उद्देश्य से आयोजित किया जाता है। पंजीकारों द्वारा विवाह संबंधों के निर्णय की स्वीकृति एवं विवाह तय हो जाने के उपरांत तत्काल विवाह का आयोजन हो जाता है।

कुछ अन्य मेले हैं-

पटना साहिब गुरुद्वारे का मेला, सहोदरा मेला, सबौर मेला, कपिलेश्वर स्थान मेला, काढ़ागोला मेला, जटमलपुर मेला, देकुली मेला, संक्रांति मेला, हरदीगढ़ मेला, सिंघेश्वर स्थान का मेला, पटना पुस्तक मेला, घौंसी मेला, गया का पितृपक्ष मेला, राजगीर का मलमास मेला, बाबा ब्रह्मेश्वरनाथ का मेला, बक्सर का मेला, पावापुरी का दीपोत्सव मेला, सिमरिया मेला, बड़गाँव का मेला आदि।

बिहार के पर्व

त्योहार—बिहार के प्रमुख पर्व-त्योहार इस प्रकार हैं—

मकर संक्रांति, संत पंचमी, रामनवमी, शिवरात्रि, होली, दुर्गा-पूजा, कोजागरा व्रत, पितृपक्ष, जीवित पुत्रिका या जितिया व्रत, दीपावली, अन्नकूट या गोवर्धन पूजा, भ्रातृ द्वितीया, चित्रगुप्त पूजा, मधु श्रावणी, कृष्णाष्टमी, चौथ चंदा या चौरचन, तीज, छठ पर्व, जानकी नवमी, झूलन, देवोत्थान या देव उठान, नागपंचमी, पूर्णिमा व्रत, रक्षाबंधन या राखी, अनंत चतुर्दशी, जूड़-सीतल, वट-सावित्री, कर्मा-धर्मा, सामा-चकेवा, महावीर जयंती, बुद्ध जयंती, गुरु गोविंद सिंह जन्म-दिवस, ईद, मुहर्रम, क्रिसमस।

बिहार का लोक-संगीत

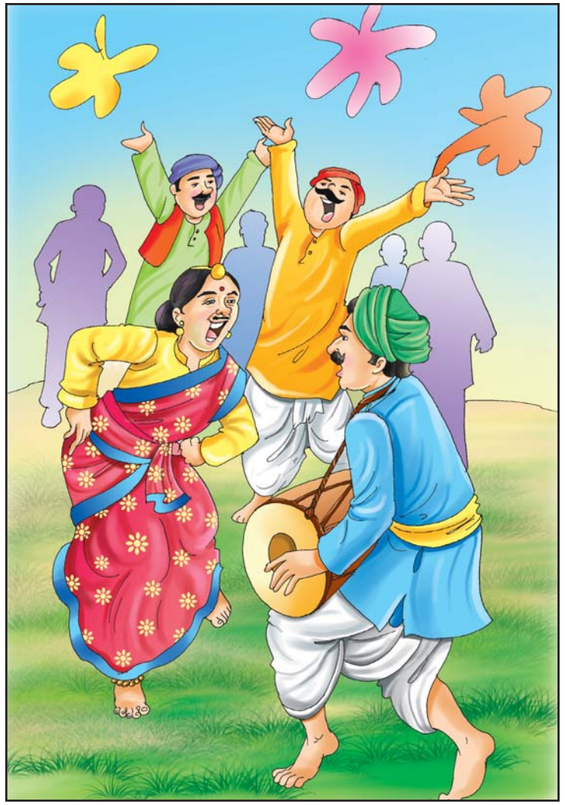

बिहार की माटी-पानी में लोक-संगीत की विपुल संपदा भरी पड़ी है। बिहार के समग्र लोकगीतों को निम्न आधार पर विभाजित कर देख सकते हैं—

संस्कार गीत, ऋतुओं के गीत, व्रत एवं त्योहारों के गीत, जाँत के गीत, श्रम गीत, बाल गीत, नृत्य गीत, रस के गीत, धार्मिक भावना के गीत, विविध गीत।

बिहार के मेले

बिहार के प्रसिद्ध मेले इस प्रकार हैं—

सोनपुर का मेला या हरिहर क्षेत्र मेला—सोनपुर गंडक और गंगा के संगम पर अवस्थित एक प्राचीन तीर्थ-क्षेत्र है। यहाँ सोनपुर का एशिया-प्रसिद्ध मेला कार्तिक पूर्णिमा से आरंभ होकर एक महीना तक चलता है। यह मेला राज्य का सबसे पुराना व विशाल मेला है। इस मेले का धार्मिक व सांस्कृतिक महत्त्व है।

वैशाली का मेला—भगवान् महावीर की जन्म-स्थली होने के कारण वैशाली क्षेत्र में चैत्र त्रयोदशी को एक विशेष मेले का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर यहाँ बहुसिद्धांत संगोष्ठी एवं विद्वत् सम्मेलन का आयोजन किया जाता है।

सीतामढ़ी का मेला—सीतामढ़ी में प्रत्येक वर्ष चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी को रामनवमी के अवसर पर एक भव्य मेले का आयोजन किया जाता है। इस दिन श्रीरामचंद्रजी, सीता और रामभक्त हनुमान की पूजा होती है। नगर स्थित जानकी मंदिर के पास विवाह-पंचमी का मेला भी आयोजित होता है।

खान-पान

बिहार में शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों प्रकार के व्यंजन पसंद किए जाते हैं। अनेक मिठाइयों के अतिरिक्त अनरसा की गोली, खाजा, मोतीचूर का लड्डू, तिलकुट यहाँ की खास पसंद हैं। सत्तू, चूड़ा-दही और लिट्टी-चोखा जैसे स्थानीय व्यंजन तो यहाँ के लोगों की बड़ी पसंद हैं। लहसुन की चटनी भी बहुत पसंद करते हैं। सुबह के नाश्ते में चूड़ा-दही या पूरी-जलेबी खूब खाए जाते हैं। चावल-दाल-सब्जी और रात में रोटी-सब्जी यहाँ का सामान्य भोजन है।

बिहार के दर्शनीय स्थल

बिहार की पावन धरती अपने ऐतिहासिक गौरव, सांस्कृतिक वैभव, भौगोलिक संपन्नता, प्राकृतिक सुरम्यता, वन-संपदा एवं जीव-जंतुओं की विविधता के कारण आगंतुक पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। बिहार के प्रमुख दर्शनीय स्थल निम्नलिखित हैं—

पटना (पाटलिपुत्र)—इसकी स्थापना मगध शासक अजातशत्रु ने पाँचवीं ईसा-पूर्व अपनी राजधानी के रूप में की थी। प्राचीन समय में पाटलिपुत्र पुष्पपुरी या कुसुमपुर कहलाता था। कुछ इतिहासकार इस नगर को देवी पटन के कारण तो कुछ पूर्व नदी-पत्तन के कारण पटना के नाम का संबंध बतलाते हैं।

कुम्हरार—पटना रेलवे जंक्शन से लगभग 7 कि.मी. कुम्हरार एक गाँव है, जहाँ मौर्यकालीन राजमहल तथा राजप्रासाद के अवशेष मिले हैं। ये अवशेष वास्तुकला के उत्कृष्ट नमूने हैं, जो मौर्यकालीन व गुप्तकालीन हैं। इतिहासकारों के अनुसार यहाँ के राजमहल शानदार और मिस्र, बेबीलोन तथा क्रेटन राज्यों के समान थे।

अगम कुआँ—कुम्हरार से 2 कि.मी. पूर्व स्थित अगम कुआँ है। लोकश्रुति के अनुसार, मौर्य सम्राट् अशोक ने एकच्छत्र शासन करने के उद्देश्य से लालचवश अपने निन्यानबे भाइयों की हत्या करके उनके मृत शरीरों को इसी कुएँ में डाल दिया था। कालांतर में पश्चात्ताप कर उसने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया था।

शीतला देवी मंदिर—अगम कुआँ में शीतला देवी का प्रसिद्ध मंदिर स्थापित है। इस मंदिर का जीर्णोद्धार एवं सौंदर्यीकरण हाल के ही वर्षों में हुआ है। इस मंदिर पर देवी की पूजा-अर्चना के साथ

विवाहादि संस्कार संपन्न किए जाते हैं।

श्रीहरि मंदिर गुरुद्वारा—पटना सिटी में सिखों का पवित्र धार्मिक मंदिर तख्त श्रीहरि मंदिर गुरुद्वारा है, जो सिखों के दसवें गुरु श्रीगोविंद सिंहजी का जन्म-स्थल है। गुरुद्वारे की वर्तमान इमारत सन् 1957 के लगभग बनाई गई है। पाँच मंजिली इस इमारत के एक भव्य कक्ष में गुरु गोविंद सिंहजी के हस्ताक्षर-युक्त ग्रंथ साहिब की एक प्रति एवं हुकुमनामा सुरक्षित रखा गया है।

दीदारगंज—दीदारगंज पटना नगर का एक मोहल्ला है, जहाँ मौर्यकालीन यक्षिणी की मूर्ति प्राप्त हुई थी। इस मूर्ति के पत्थर की चमक दिव्य है।

पश्चिम दरवाजा—अजातशत्रु के समय में पाटलिपुत्र में पाटली गाँव था, जिसका विस्तार पश्चिम की ओर था। इसके बाद नगर का किला बंद क्षेत्र था, जिसकी पूर्वी व पश्चिमी सीमाएँ क्रमश: पूर्वी दरवाजा और पश्चिमी दरवाजा कहलाती थीं। आज इसी पश्चिमी दरवाजे के अवशेष उपलब्ध हैं।

गैंगल तालाब—मध्यकाल में पटना सिटी के समीप एक गाँव शेख मट्ठा की मढ़ी था। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पटना के मजिस्ट्रेट मैगेल्स ने इसी गाँव के समीप नगरों के सौंदर्यीकरण के क्रम में एक तालाब बनवाया, जिसका नाम भी उन्हीं के नाम पर 'मैंगल तालाब' रखा गया।

बेगमपुर—पटना रेलवे स्टेशन के दक्षिण में यह मोहल्ला है। यहाँ हैदर अली के दामाद सिराजुद्दौला के पिता हेवतगंज का मकबरा स्थित है।

धवलपुरा—पटना नगर के इस मोहल्ले में शेरशाह सूरी ने एक मसजिद का निर्माण कराया था। यह मसजिद आज भी सुरक्षित और सुदृढ़ स्थिति में है। यहीं एक मकबरा भी है, जो अवध के संस्थापक सादत खाँ के पिता का है।

पत्थर की मसजिद—पटना नगर के पूर्वी क्षेत्र में एक पत्थर की मसजिद अवस्थित है। इस मसजिद का निर्माण जहाँगीर के पुत्र परवेज के आदेश पर नजर खाँ ने वर्ष 1626 में करवाया था।

गोलघर—पटना के शहरी क्षेत्र बाँकीपुर में अर्धगोलाकार आकृति का विशाल घर गोलघर के रूप में प्रसिद्ध है। इसका निर्माण वर्ष 1786 में कैप्टन जॉन गार्स्टिन ने करवाया था। गोलघर की ऊँचाई 96 फीट है तथा इसकी दीवार 12 फीट मोटी है।

पादरी की हवेली—यह ईसाई धर्म-प्रचारकों एवं यात्रियों के ठहरने का स्थान था। पटना शहर के पूर्वी भाग में स्थित यह एक प्राचीन गिरजाघर है, जिसका निर्माण सन् 1772 में फादर जोसेफ ने

वैशाली—यह बिहार की राजधानी से 55 कि.मी. दूर उत्तर बिहार में स्थित है। भगवान् महावीर का जन्म वैशाली में ही 527 ई.पू. हुआ था। भगवान् बुद्ध ने वैशाली में अनेक बार आकर उपदेश दिया था। उन्हीं की स्मृति में अशोक ने सिंह स्तंभ की स्थापना की थी। 38 ई. में यहाँ बौद्ध धर्म-प्रचारकों का द्वितीय सम्मेलन हुआ था। छठी शताब्दी ई.पू. में यह लिच्छवियों की कर्मभूमि थी, जिन्होंने यहाँ विश्व का प्रथम गणतंत्र स्थापित किया। वैशाली में अशोक की लाट, जैन मंदिर, बौद्ध स्तूप, राजा विशाल की गढ़ी, अशोक स्तंभ, प्राचीन तालाब, बावन पोखर मंदिर, हरिकटोरा मंदिर आदि दर्शनीय स्थल हैं।

वाल्मीकि नगर—वाल्मीकि नगर उत्तर बिहार का अत्यंत ही रमणीय स्थल है। अनेक धार्मिक एवं सांस्कृतिक अवशेषों का धरोहर-युक्त यह स्थल नेपाल की सीमा पर प्रकृति की गोद में बसा है। यहाँ गंडक परियोजना स्थापित है, साथ ही एक अभयारण्य की भी स्थापना की गई है।

नवादा—नवादा जिले के अंतर्गत 1,300 फीट ऊँचे हजारीबाग पर्वत पर 365 कुंड हैं। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार सभी कुंडों का निर्माण भगवान् श्रीकृष्ण ने पांडवों के अज्ञातवास की अवधि में किया था। यहाँ ककोलत जल-प्रपात 150 फीट की ऊँचाई से गिरता है। जल-प्रपात तक पहुँचने के लिए 2,700 फीट की दूरी में सीढ़ियों का निर्माण किया गया है।

विक्रमशिला—10वीं से 12वीं शताब्दी पाल कालीन विक्रम विश्वविद्यालय पठन-पाठन का मुख्य केंद्र था। विश्वविद्यालय के अवशेष तथा वृहदाकार तालाब बौद्ध इतिहास के प्रमुख साक्ष्य हैं। यहाँ 1903 ई. में अनेक बौद्ध व हिंदू धर्म से संबंधित मूर्तियाँ तथा अन्य सामग्रियाँ उत्खनन के बाद प्राप्त हुई हैं। ऐसा माना जाता है कि यह बर्न्स नामक एक यूरोपियन द्वारा इसे गायब कर दिया गया, जबकि बलगा नामक पुरातत्त्वविद् ने सिलाखाजा के नाम से विक्रमशिला की उत्पत्ति को माना है।

आरा—पटना से 32 मील की दूरी पर आरा में आरण्य देवी का प्रसिद्ध मंदिर है। इस मंदिर में देवी की दो आदमकद मूर्तियाँ हैं। इसके अतिरिक्त बड़ी मठिया का राम मंदिर भी प्रसिद्ध है।

मुंगेर—गंगा के तट पर बसा प्राचीन नगर मुंगेर प्राचीन अंग साम्राज्य का प्रमुख केंद्र और मीर कासिम की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध है। महाभारत काल में मुंगेर की राजधानी चंपानगर थी, जिसके प्राचीन अवशेष यहाँ खुदाई में मिले हैं। मुंगेर में स्वामी शिवानंद के शिष्य स्वामी सत्यानंद द्वारा स्थापित 'योग विद्यालय' विश्व स्तर की योग प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्था है।

के प्राचीनतम ऐतिहासिक स्थलों में से एक है। महाभारत के अनुसार यह मगध शासक जरासंध की राजधानी थी। राजगीर के ऐतिहासिक स्थलों में यहाँ जरासंध का अखाड़ा है, जो पहाड़ी पर स्थित है। राजगीर का वास्तविक उत्कर्ष बिंबिसार के काल में हुआ, जिसने इसे मगध की राजधानी बनाया। अजातशत्रु द्वारा राजगीर की सुरक्षा हेतु बनाई गई विशाल दीवार के अवशेष अभी भी देखे जा सकते हैं। राजगीर के दर्शनीय स्थलों में वेणुवन, करंद सरोवर, सप्तधारा, मखदूम कुंड, सप्तपर्णी गुफा, रत्नागिरि, जीवक आम्रवन आदि भी उल्लेखनीय हैं।

पावापुरी—पटना से 104 कि.मी. तथा नालंदा से 25 कि.मी. की दूरी पर पावापुरी स्थित है। यहीं जैन धर्म के प्रवर्तक भगवान् महावीर ने निर्वाण प्राप्त किया था। यहाँ एक भव्य मंदिर है। झील के मध्य एक जल-मंदिर है। दीपावली में भारत के विभिन्न भागों से जैन धर्म के अनुयायी यहाँ आकर उत्सव मनाते हैं।

बिहार शरीफ—पटना से 64 कि.मी. दूर बिहार शरीफ मुसलिम संस्कृति का प्रमुख केंद्र है, जहाँ तेरहवीं से सोलहवीं शताब्दी के मध्य मुसलिम संस्कृति अपनी चरम सीमा पर विकसित हुई। एक मुसलिम संत पीर मखदुमशाह शरीफुद्दीन का यहाँ मकबरा है, जो मुसलमानों का तीर्थस्थल है। यहाँ का वार्षिक उर्स का आयोजन राष्ट्रीय एकता का अनुपम उदाहरण है। इस नगरी में मलिक इब्राहिम बयाँ का भी मकबरा है।

सासाराम—पटना से 193 कि.मी. दूर दिल्ली-कोलकाता रेलमार्ग पर शाहबाद जिले में सासाराम नगर है, जहाँ मध्यकालीन भव्य इमारतें हैं। शेरशाह सूरी का प्रसिद्ध किला और मकबरा यहीं स्थित है। शेरशाह का किला 45.72 मीटर ऊँचा तथा इसका गुंबद 21.93 मीटर ऊँचा है, जो आगरा के ताजमहल से भी ऊँचा है। सासाराम नगर के पूर्व चंदनपीर पहाड़ी पर एक गुफा है। इस गुफा में अशोक के शिलालेख पाए गए हैं। पहाड़ी की चोटी पर एक मुसलिम फकीर की दरगाह है।

भागलपुर—भागलपुर रेशम उत्पादन में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। भागलपुर से 42 कि.मी. की दूरी पर प्राचीन विक्रमशिला विश्वविद्यालय के खँडहर विद्यमान हैं। भागलपुर के समीप बरारी से गंगा के नीचे भूगर्भ गुफा मार्ग बनाया गया था। यहाँ गंगा के तट पर अजगैबीनाथ का मंदिर दर्शनीय स्थल है। भागलपुर से 42 कि.मी. पूर्व मंदार पहाड़ियों पर बना विष्णु मंदिर हिंदू धर्मावलंबियों का पूज्य तीर्थस्थल है।

कराया था। इसी के एक हिस्से में मदर टेरेसा की संस्था सिस्टर ऑफ चैरिटी का कार्यालय है। यह क्षेत्र 1857 ई. के स्वतंत्रता समर का महत्त्वपूर्ण स्थल रहा है।

शहीद स्मारक—यह स्मारक सन् 1948 के आंदोलन में शहीद सात नवयुवकों की स्मृति में बनाया गया है, जो स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान सचिवालय पर तिरंगा फहराते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे।

बाँसघाट—गोलघर के पश्चिम स्थित यह स्थान पटना का मुख्य शवदाह गृह है। इसी स्थल पर भारत के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद का दाह-संस्कार किया गया था। यहीं उनका समाधि-स्थल भी है। राज्य की अनेक विभूतियों का अंतिम संस्कार भी यहाँ किया गया है।

सदाकत आश्रम—मौलाना मजहरुल हक ने वर्ष 1912 में सदाकत आश्रम की स्थापना कराई थी। यह स्थान बिहार के आधुनिक इतिहास के महत्त्वपूर्ण प्रतीकों में से एक है। यहीं 1921 में महात्मा गांधी ने 'बिहार विद्यापीठ' नामक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। डॉ. राजेंद्र प्रसाद राष्ट्रपति पद से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् यहीं रहे और उनकी मृत्यु भी यहीं पर हुई।

खुदाबख्श पुस्तकालय—यह पटना का ऐतिहासिक एवं लोकप्रिय पुस्तकालय है। इसकी स्थापना 1819 ई. में हुई। इस पुस्तकालय में अरबी व फारसी की बहुमूल्य पुस्तकें, पांडुलिपियाँ और मुगलकालीन चित्रकला के अनूठे नमूनों का संग्रह है।

पटन देवी मंदिर—पश्चिमी पटना सिटी के गुलजार बाग मोहल्ले के दक्षिण में पटन देवी का मंदिर है, जो पटना नगर की संरक्षिका देवी मानी जाती हैं।

मनेर—पटना नगर से 29 कि.मी. पश्चिम में बिहार का इसलाम धर्म का प्रमुख गढ़ मनेर स्थित है। यहाँ तेरहवीं शताब्दी में एक महान् सूफी संत पीर हजरत मखदुम याहिया मरेरी हुए।

पटना संग्रहालय—वर्तमान पटना में पटना संग्रहालय स्थित है। इस संग्रहालय में मुगल और राजपूत वास्तुकला की अनेक वस्तुएँ संगृहीत हैं, जिनमें सुंदर कांस्य प्रतिमाएँ, तिब्बत की प्राचीन पेंटिंग, मौर्यकाल के सिक्के आदि हैं।

वैकटपुर—पटना से बख्तियारपुर जानेवाले मुख्य मार्ग के समीप वैकटपुर में प्रसिद्ध शिव मंदिर है। श्रावण में यहाँ मेला लगता है और दूर-दूर के तीर्थयात्री यहाँ आते हैं।

गया—पटना से 106 किलोमीटर की दूरी पर फल्गु नदी के किनारे बसाया गया हिंदुओं और बौद्धों का प्राचीतन तीर्थस्थल गया है। यहाँ के विष्णुपद मंदिर में भगवान् विष्णु के पवित्र पद-चिह्न सुरक्षित हैं। भारत ही नहीं अपितु विश्व के अन्य देशों के हिंदू धर्म के मतावलंबी, जिन्हें कर्मकांड में आस्था है, अपने पितरों की आत्मा-शांति तथा मोक्ष-प्राप्ति की अवधारणा से यहाँ आकर पिंडदान करते हैं। इंदौर की मराठा रानी अहिल्याबाई ने विष्णु मंदिर और गया संग्रहालय का निर्माण कराया था। गया से 51 कि.मी. दूर पहाड़ियों को काटकर बराबर की गुफाएँ निर्मित की गईं।

बराबर की गुफाएँ—गया नगर के उत्तर में 24 कि.मी. की दूरी पर छोटी-छोटी पहाड़ियों का विस्तृत क्षेत्र है। इन पहाड़ियों को बराबर की पहाड़ियाँ कहते हैं। इन पहाड़ियों में अनेक गुफाएँ हैं, जिनमें सात गुफाएँ ऐतिहासिक व धार्मिक महत्त्व की हैं। चार गुफाएँ बराबर पहाड़ी समूह के अंतर्गत शेष तीन नागार्जुन पहाड़ी की गुफा के अंतर्गत हैं। इन्हें 'सतधरवा' के नाम से भी जाना जाता है। बराबर पहाड़ी समूह की गुफाएँ निम्नलिखित हैं—

कर्ण गुफा, सुदामा गुफा, लोमर्षि गुफा, विश्वामित्र गुफा, नागार्जुन पहाड़ी की गुफाएँ, गोपी गुफा, बाहमक गुफा, वैदांतिक गुफा।

बोधगया—गया से 14 किलोमीटर दक्षिण में बोधगया स्थित है। यहीं पीपल के वृक्ष के नीचे गौतम बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था। इस वृक्ष को बोधिवृक्ष कहते हैं। सम्राट् अशोक ने यहीं से पीपल के छोटे-छोटे पौधे श्रीलंका को भेजे थे। यहीं महाबोधि मंदिर है, जहाँ भगवान् बुद्ध की विशाल प्रतिमा है।

नालंदा—पटना से 90 कि.मी. दक्षिण में विश्व-प्रसिद्ध प्राचीन बौद्ध विश्वविद्यालय नालंदा स्थित है। यहाँ 10,000 छात्रों के अध्ययन की सुविधा थी। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण वर्ष एक छात्र और अध्यापक के रूप में यहाँ व्यतीत किए थे। अशोक ने यहाँ एक मठ की स्थापना की थी। भगवान् महावीर भी यहीं रहे थे। प्रसिद्ध बौद्ध सारिपुत्र का जन्म भी यहीं हुआ था।

राजगीर—पटना से 103 कि.मी. तथा नालंदा से 19 कि.मी. दूर राजगीर स्थित है। यह बिहार